दलित, भूमंडलीकरण के आइने में

रंजीत कुमार राम

भारतीय समाज और संस्कृति विभिन्नताओं से भरा है। किसी समाज के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि उस समाज के सभी समुदायों की उन्नति हो, उसका विकास हो। यदि समाज के किसी एक समुदाय का भी विकास या उन्नति नहीं हुआ हो तो उस समाज को सभ्य, विकसित और पूर्ण समाज नहीं कहा जा सकता है। भारतीय समाज में इसका अभाव हैं। भारत में स्वचेपकमक विकास हुआ हैं। एक को सर्वश्रेष्ठ, संसाधन संपन्न, तो दूसरा वर्ग निम्न, संसाधन विहिन, वंचित और बहिष्कृत हैं। भारत में दलित कहा जाने वाले एक बहुत बड़ा तबका है, जो सदियों से वंचित और हाशियें पर रहा हैं। इस भूमंडलीकरण के युग में भी इनकी स्थिति कमोंवेश वैसी ही है। अनेक विद्वानों ने भूमंडलीकरण को साम्राज्यवाद का नया अवतार कहा है, वहीं भारत के संदर्भ में वर्ण–व्यवस्था और ब्राह्मणवाद का नवीनीकरण की संज्ञा दिया हैं।